What will I write 5

What will I write?
I am thinking sitting in the balcony,
I'm thinking of writing about this strange morning -
It's lazy, soothing everywhere,
A dash of happiness all around
So many colorful dragonflies flying around-
Birds are chirping in their languages.

Or will I write about the old lady,
Who came near my house last afternoon?
Some fishes on a van rickshaw-
Rohu, Pomfret, Sardines, Asian seabass,
She's shouting from down there,
"Sir, you need some fish?
None of my fishes got sold
I've been walking since four hours "
The old lady and her son -
There's no mask on their face,
No rice in their stomach, nor any mark of ink:
Who'll teach them about masks?
The old woman started crying loudly,
"Sir where are you all
Nobody bought my fish
The kids at home are crying in hunger!"
What will I write?

I came running in the balcony
The fishes are in bad condition I think.
"Aunt, how much a kilo?"
"You give whatever you think is fit!"
"What do you mean?"
Anyway I bought two kinds of fish half-heartedly;
She doesn't understand any calculation.
The old woman says, "You calculate and pay Sir!"

What will I write?

I asked the son of the old woman-
"You don't know the price, you don't know calculation,
How will you understand if you made a profit or a loss?"
"Sir my mother used to work at people's house,
I used to pull a van rickshaw.
For two months, there's no work due to Corona
So if we earn anything by selling fish, our stomachs will be saved".
The old woman has started to cut the fish on the road.
"Aunt, you don't have to cut them, we'll do it"
Sir, you've looked on to us,
And I Won't do this much? What are you saying?"
Tell me, what will I write?

White morning, cranes flying away in the far-away blue,
I wish to write a lot about the nature
Or shall I write-
This survival without education and food
The intense crying of the old mothers?
The whole day I keep thinking,
What will I write?

কি লিখব আমি? (5)

কি লিখব আমি ভাবছি বারান্দায় বসে,
লিখব ভাবছি এই অদ্ভুত সকাল নিয়ে,
আলসে স্নিগ্ধ চারিদিক,
চারিপাশে ঝিরঝিরে আনন্দ
কত রং বেরংএর ফড়িং উড়ে বেড়াচ্ছে
কত পাখিরা নানা ভাষায় কথা বলছে,
নাকি লিখব
কাল হুররেংগ বাড়ির নিচে আসা
হাড়িয়া আরওয়ালাকে নিয়ে?
একটা ভ্যানরিকশায় সাজানো কিছু আর
ডিম, বিস্কুট, ছাতা আর পোয়াঘোলা।
বাড়ির নিচে দাঁড়িয়ে চেঁচাচ্ছে
"ও বাবু আর নেবে?

(20)

একটা আরও বিক্রি হয়নি আমার,
তাই ধান্দা করে হাঁটছি।”

ভুড়িয়া আর তার ছেলে
মুখে আজ তার দেখা নেই
পেটে ভাত নেই কালির আঁচড় নেই
আজ ওদের কে শেখাবে?
ভুড়িয়া চিৎকার করে কাঁদতে শুরু করলো,
“ধরিনা বেঁধেও না কেউ,
আমার আর কেউ নেয় নি
বাড়ির ছাগলরা ক্ষিদেয় কাঁদবে তো!”
কি লিখব আমি?
গোড়ে গঙ্গায় তলায়
আরে অবস্থা খুব খারাপ মনে হচ্ছে,

"মাছ কত করে দিলে?"

"যা হোক হবে দাও না বাবা।"

"আগে?"

যাই হোক নিয়োজি হয়েও চুরুক্ষের আর নিলাম
দামের হিসেব কিছুই বোঝে না

ভড়িয়া বলে "তুমি হিসেব করে দাও না বাবা।"

কি লিখব আমি?

ভড়িয়ার ছেলেকে জিজ্ঞেস করলাম –

"দাম বলতে পারো না, হিসেব জানো না
কি করে বোঝে লাভ হলো না লোকসান?"

"বাবু, মা লোকের বাড়ি কাজ করতো,
আমি ভ্যানরিক্সা চালাতাম।
করোনায় দুজনার কাজ বন্ধ
তাই মাছ বেচে কিছু আয় হলে বাঁচবে পেটগুলো।"

ঝড়িয়া আর কাটতে বসে গেছে ঝাপসায়। "

" ঝড়িয়া আর কাটতে হবে না, আমরা কেটে নেব।

বললে — " তুমি আমার দিকে চেয়েছো

কেটে দিব নি? কি করব? "

বলুন, কি লিখব আমি?

সাদা সকাল, সাদা বক উড়ে যায়

দূর নীলিমায়,

প্রকৃতি নিয়ে অনেক অনেক লেখায় হচ্ছে,

নাকি লিখব —

এই অভিমান, অনাহার নিয়ে বেঁচে থাকা

হাড় বের করা ঝড়িয়াদের কান্না?

কি লিখব আমি ভেবেছি সারাটা বেলা।

क्या लिखूं मैं?(5)

बरामदे में बैठकर सोच रहा हूँ,

क्या लिखूं मैं?

सोच रहा हूँ इस अजीब सुबह को लेकर लिखूं,

चारों तरफ आलस्य और सौम्यता,

कितने रंग-बिरंगे टिड्डें उड़ रहे हैं,

कितने पंछी न जाने किन किन भाषाओँ में बात कर रहे हैं,

या लिखूं,

उस बुढ़िया मछलीवाली को लेकर,

जो कल दोपहर को घर के नीचे आयी थी?

एक वैनरिक्शे में कुछ मछलियां जैसे

रोहू,पॉम्फ्रेट,मोयरा और पोयभोला,सजाकर,

घर के नीचे खड़ी चिल्लाकर पुकार रही थी,

बाबूसाहब,मछली लेंगे ?

चार घंटो से चल रही हूँ,

मेरी एक भी मछली नहीं बिकी।

बूढ़ी माई और उनके बेटे,

चेहरे पर मास्क नहीं,

पेट में भोजन नहीं,

कौन सिखाएगा उन्हें की मास्क पहनना है ?

बूढ़ी माई चिल्लाकर रोने लगी,

ओ बाबूलोग !कोई तो घर से निकलो,

किसी ने मेरी मछली नहीं ली।

घर के बच्चें भूख से रो रहे हैं !

क्या लिखूं मैं?

दौड़कर बरामदे में आया,

मछलियों की हालत बहुत ख़राब सूझी मुझे,

"मौसी,एक किलो कितने का है?

कुछ भी हो,सोच समझकर दे दो न बेटा।

मतलब?

खैर,मन न होकर भी दो किस्म की मछलियाँ ली।

बुढ़िया कीमत का हिसाब कुछ भी नहीं समझती,

वह बोली,तुम हिसाब कर दो न बेटा

क्या लिखूं मैं ?

बूढ़ीमाई के बेटे से पूछा,

कीमत नहीं बोल सकते,हिसाब करना नहीं आता?

कैसे समझोगे लाभ हुआ या नुकसान?

बाबू,माँ लोगों के घर काम करती थी,

मैं वैनरिक्शा चलाता था,

कोरोना के कारण,

दो महीने से काम धंधे बंद हैं।

इसलिए अगर मछली बिके,

तो कुछ आमदनी होगी,

हमारे पेट भी बचेंगे।

बूढ़ीमाई सड़क पे मछली काटने बैठ गयी,

बूढ़ी माई,मछली काटने की जरुरत नहीं,हमलोग काट लेंगे।

बोली -तुमने मुझपर दया की,

नहीं काटके दूँ,यह क्या कहते हो

कहिए,क्या लिखूं मैं ?
सफ़ेद सुबह,
सफ़ेद बगुला उड़ जाता है,
दूर नीलिमा में,
प्रकृति को लेकर बहुत कुछ लिखने की इच्छा है,
या लिखूं,
इस निरक्षरता,अशिक्षा,भूखमरी को लेकर बची,
हड्डियों को निकाली हुई बूढ़ी माओं की व्यथा-कथा,
क्या लिखूं मैं सोचता हूँ सारा दिन।